मौजूदा वक्त में कृषि विपणन की समस्या बहुत बड़ी : डॉ.हेमा यादव

जागरूकता कार्यक्रम जल का कृषि में कुशल उपयोग और कृषि विपणन कार्यक्रम का आयोजन

नवज्योति/गुड़ामालानी।

उपखंड मुख्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र गुड़ामालानी पर केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एवं चौ. चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में जागरूकता कार्यक्रम जल का कृषि में कुशल उपयोग और कृषि विपणन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें बोलते हुए चौ.चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान जयपुर के निदेशक डॉ. हेमा यादव ने बताया कि आज के समय में कृषि विपणन की समस्या बहुत बड़ी है। जिसके लिए किसानों को समूह बनाकर समाधान करना होगा और एफपीओ का गठन करने के बारें में बताया। साथ ही उन्होंने एफपीओ से होने वाले फायदे के बारे में विस्तार से बताया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए काजरी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ.अनुराग सक्सेना ने जल उत्पादकता तथा विभिन्न फसलों में पानी की उपयोग क्षमता के बारे में बताते हुए जल बजट के हिसाब से खर्च कर पैदावार बढ़ाने के बारे में बताया।

इस आर्थिक युग में कृषि को व्यवसाय बनाने की जरूरत है

केन्द्र प्रभारी डॉ प्रदीप पगारिया ने आये हुए सभी आगंतुओं का स्वागत करते हुए मृदा एवं जल परीक्षण का तरीका बताते हुए कम लागत में अधिक पैदावार के गुर बताये। साथ ही उन्होंने कहा कि इस आर्थिक युग में कृषि को व्यवसाय बनाने की जरूरत है जिससे किसानों की आय बढ़ सके। अनार में फल फटने की मुख्य समस्या पाई जाती है। साथ ही बताया कि सूखे मौसम में नियमित सिंचाई करते रहना चाहिए।

परियोजना के बारे में दी जानकारी डॉ लखमाराम चौधरी ने बताया कि जैविक खेती और मीठे एवं शुद्ध पानी से अनार का उत्पादन होने से इसकी मांग प्रदेश व देश के साथ-साथ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी होने लगी है। अजीत कु मार रोनियार जेआरएफ नियाम एवं निमीश नारायण गौतम जेआरएफ काजरी ने कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए परियोजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान गुड़ामालानी क्षेत्र के किसान मौजूद रहे।

उर्वरकों का प्रयोग करने की आवश्यकता है

डॉ. आर के गोयल ने वर्षा जल संग्रहण एवं प्रबंधन की चर्चा करते हुए कहा कि जिला प्रारंभ से ही वर्षा जल की बचत करता आया है पर अब परम्परागत एवं वैज्ञानिक ज्ञान को एक साथ मिलाकर पानी की बचत करनी है ताकि आने वाले समय में कम पानी से अधिक पैदावार कर सकें। डॉ. एनआर पंवार ने मृदा पानी एवं पोषक तत्व के प्रबंधन के बारे में बताते हुए विभिन्न पोषक तत्वों की कमी के लक्षण एवं उस आधार पर उर्वरक प्रयोग की सलाह देते हुए कहा कि अंधाधुध रसायन की जगह अनुसंशित दर के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करने की आवश्यकता है ताकि मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण बराबर बना रहे।